INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | OCTOBER - 2023

# रीवा संभाग में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्रों के विविध आयाम का अध्ययन

मनीष कुमार नामदेव[1] , डॉ. भरत कुमार विश्वकर्मा[2]
[1]शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,रीवा (म.प्र.)
[2]विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, जिला रीवा (म.प्र.)

**सारांश –**

आधुनिक युग मे जीवन शैली और परिवेश में मानव जब अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं। ऐसी समयावधि में खेलों का महत्व स्वतः सुस्पष्ट हो जाता है कि खेलों के माध्यम से न सिर्फ व्यक्ति की दिनचर्या नियमित रहता है अपितु ये उच्च रक्तचाप, ब्लड शुगर, हृदय रोग, मोटापा इत्यादि जैसे रोगों की संभावनाओं को भी कम करते हैं। इनके अतिरिक्त खेल के माध्यम से व्यक्ति स्वयं को चुस्त दुरस्त रखने में भी सहायता मिलती है जिससे व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन सक्रियतापूर्वक कर पाते हैं। एक अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए अच्छे स्वास्थ का होना बहुत जरूरी है, जिस तरह शरीर को अच्छा एवं स्वस्थ रखने हेतु व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी तरह खेलकूद का भी स्वस्थ जीवन के लिए अत्यधिक महत्व है। खेल खिलाड़ी छात्रों तथा युवाओं के मानसिक और शारीरिक विकास दोनों ही हेतु अनिवार्य है। नवीन पीढ़ी को शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ खेलों में भी रूचि बढ़ाने की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द –** रीवा संभाग, अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्रों।

## प्रस्तावना –

खेल नैतिकता में धर्म, नस्ल, समाज के कुरीतियों से ऊपर उठकर खिलाड़ी खेल का प्रदर्शन करते हैं। इस तरह खेल शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहयोग प्रदान करता है। कहीं न कहीं खेलों के प्रति दिखाायी गई भावनाओं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द्र को भी बढ़ायी है। किक्रेट, फुटबाल, विश्वकप और ओलम्पिक खेल वैश्विक एकता और सांस्कृतिक आदान प्रदान में सहयोगी होता है। खेल नैतिकता स्वयं में अनेक मूल्यों का समन्वय है इनके बेहतर प्रदर्शन से खिलाड़ी आमजनमानस हेतु प्रतीक बनता है। भारतीय किक्रेट खिलाड़ी सचिन तेदुंलकर का नाम इस क्षेत्र में सम्पूर्ण हेतु एक मिशाल है। किंतु जब खेल में खेलभावना के जगह पर गेममैनशिप को महत्व दिया जाता है तब खेल नैतिकता प्रभावित होता हैं। खेल नैतिकता में निष्पक्षता, योग्यता प्रदर्शन के मौके की समता, दूसरों के प्रति सम्मान, उत्तरदायित्व जैसे तत्व शामिल होता है। इन तत्वों को खेलों

की जगत में स्पोर्टसमैन शिप के नाम से संशोधित किया जाता है। अतएव स्पपोर्टसमैनशिप में जीत के स्थान पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को काफी महत्व दिया जाता है। यह स्पोर्टसमैनशिप टफ वट फेयर प्ले के सिद्धान्त पर निर्भर है। इसलिए खिलाड़ियों समेत खेल से जुड़े सम्पूर्ण व्यक्तियों को स्पोर्टसमैनशिप के सिद्धान्त को अपनाकर खेल के विविध आयामों को प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।

वर्ष 2016 में अनुराग ठाकुर लोकसभा के सदस्य द्वारा राष्ट्रीय खेल नैतिकता आयोग की स्थापना के विषय में निजी विधेयक लोकसभा में अभिव्यक्त किये गये। इस विधेयक का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय खेल नैतिक संस्थान का गठन है जिनमें यह निश्चित की जा सके कि सम्पूर्ण खेलों में नैतिक क्रियाकलाप हो तथा साथ डोपिंग, मैच फिक्सिंग, आयु, धोखाधड़ी, खेलों मे महिलाओं के यौन उत्पीड़न का उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण पहल किया जा सके। खेल सिद्धान्त का उपयोग खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्रों के विविध व्यवहारों के विस्तृत अध्ययन की गयी है। प्रारंभ में यह अर्थशास्त्र में आर्थिक व्यवहार के एक व्यापक संग्रह को समझने हेतु विकसित की गयी थी, जिसमें बाजारों, कम्पनियों एवं गेम थ्योरी का प्रयोग हुआ है तथा गेम थ्योरी, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक आयामों के अध्ययन में प्रयोग हुआ है।

## विश्लेषण –

खेल का नाम सुनकर ही खिलाड़ियों के शरीर में अजीब सी स्फूर्तिदायक अनुभूति होने लगता है। खेल नाम शब्द कानों में पड़ने से खिलाड़ी छात्र/छात्राएं खिलखिला उठते हैं। अतः खेल शब्द से सम्पूर्ण आयु वर्ग के व्यक्तियों में बाल्यावस्था जाग जाता है तथा अपनी समस्त समस्या, तकलीफ, दुःखों को भूलकर सम्पूर्ण लोग उस उस खेल द्वारा होने वाली गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं तथा खेल समाप्त होने के पश्चात जो शारीरिक एवं मानसिक सुख की अनुभूति होता है उसे शब्दों में अभिव्यक्त करना काफी मुश्किल है। आनंद समस्त लोगों को प्राप्त होता है, चाहे खेल खेलने वाला खिलाड़ी हो अथवा दर्शक हो, उसके शरीर का प्रत्येक हिस्सा खेल का आनंद प्राप्त कर रहा है, किंतु अनुभूति का स्तर अलग–अलग होता है। प्रत्येक लोग चाहे वह किसी भी आयु वर्ग का हो किंतु खेल खेलते समय वह सम्पूर्ण प्रकार से अपने वाल्यावस्था के माहौल में संलिप्त हो जाता है और यही वह परम सुख है। इसी परमसुख के आनंद को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने खिलाड़ी और गैर खिलाड़ी छात्रों के विविध आयामों का अध्ययन किया है। चूंकि शोधकर्ता के शोध का विषय महाविद्यालय में अध्ययनरत खिलाड़ी छात्रों के राज्य स्तरीय प्रदर्शन का अध्ययन'' (अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में) है। अतः शोधकर्ता ने रीवा संभाग में अध्ययन खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्रों के विविध आयामों पर विस्तारपूर्वक चर्चा किया है।

**(अ) सामाजिक आयाम –** कालान्तर से ही मानव द्वारा खेलों को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाया गया है। आदिमानव द्वारा तीरंदाजी और नेताबाजी के साथ शिकार करके अपनी भूख मिटाते रहते थे यानि अपना पेट पालते हैं। खेलें सिर्फ मनोरंजन का साधन है, बल्कि प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक जोश, हृष्टता पुष्टता, शक्ति एवं जज्बात के दिखावे हेतु खेले गये। आय शारीरिक शिक्षा पर पर्याप्त जोर दिया जाता है। शारीरिक शिक्षा भिन्न–भिन्न व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों का विकास करता है ताकि व्यक्ति और समाज का विकास संभव हो सके। प्राचीनकाल के खेलों तथा आधुनिक खेलों में चाहे विभिन्नता हो किंतु इन खेलों के पीछे एक भावना निहित होता है। कालान्तर के लोगों ने इसे दूसरे पर हुकुमत एवं शासन करने इत्यादि हेतु उपयोग किया जाता था। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा का युग है जहाँ प्रत्येक छात्र/छात्राएं सबसे आगे रहना चाहते हैं। खेल प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों की बुद्धि एवं सामाजिक कौशल को बढ़ाने में सहायक है। छात्र जीवन में खेलों का विशेष महत्व सदैव से हो रही है तथा सदैव ही रहेगा जो छात्रों के चहुंमुखी विकास हेतु अनिवार्य है। खासतौर से पारम्परिक खेलों से ध्यान केन्द्रित करना जरूरी है। अनेक प्रकार के खेल खेलने से

छात्रों के आत्मसम्मान में काफी सुधार परिलक्षित होता है। इससे खिलाड़ी छात्रों के मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, वास्तव में जब खेल में खिलाड़ी छात्र की टीम विजित हो जाती है तो खिलाड़ी छात्रों के लिए वह क्षण काफी सुखद होता है। इससे उसमें स्किल डेवलपमेंट के साथ–साथ धैर्य रखने की क्षमता का भी विकास होता है। इसके अतिरिक्त खिलाड़ी छात्र जीवन में अपने लक्ष्य को लेकर काफी दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ते हैं। इससे छात्र पढ़ाई में भी अच्छे होते हैं।

अभी हाल के सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि खिलाड़ी छात्रों में संज्ञानात्मक कौशल का विकास तीव्रता से होता है और गैर खिलाड़ी छात्रों की तुलना में वे छात्र उत्तम प्रकार से ध्यान केन्द्रित कर सकने में सक्षम होते हैं तथा खिलाड़ी छात्र अपने मस्तिष्क का प्रयोग भी अत्यधिक उत्तम प्रकार से कर पाते हैं। खिलाड़ी छात्रो का शरीर अन्दर से काफी मजबूत होता है तथा इनका शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है। इनकी तुलना में गैर खिलाड़ी छात्रों का शरीर भीतर से मजबूत नहीं रहता और इनका शारीरिक विकास भी खिलाड़ी छात्र की तुलना में मंद गति से होता है। वास्तव में खेल खेलने के दौरान खिलाड़ी छात्रों के शरीर में तीव्र गति से ऑक्सीजन का संचार होता है। इससे ब्लड तंत्र भी उत्तम होता है। रीवा संभाग के खिलाड़ी छात्र खेलकूद में हिस्सा लेकर अनेक प्रकार के सामाजिक कौशल का भी विकास कर रहे हैं। उन्हें मित्रों से बातचीत करना, टीम भावना के साथ खेलना तथा दूसरों के प्रति स्वीकार्यता बढ़ती है। इससे उन्हें भविष्य में काफी सहयोग मिलती है। खेल खिलाड़ी छात्रों के समस्त व्यक्तित्व के विकास में अभूतपूर्व योगदान करते हैं। खेल के दौरान खिलाड़ी छात्रों के शारीरिक अंगों का विकास होता है, साथ ही संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास में भी खेलों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रहता है जबकि गैर खिलाड़ी छात्रों की संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास खिलाड़ी छात्रों की तुलना में कम रहता है। गैर खिलाड़ी छात्रो की सामाजीकरण में भी भूमिका कम रहता है। रीवा संभाग के गैर खिलाड़ी छात्रों में सक्रियता, उत्साह, सजगता एवं सौहार्द्र कम उत्पन्न होता है, परंतु खिलाड़ी छात्रों की खेलों से सक्रियता, उत्साह तथा सजगता और सौहार्द्र पैदा होता है। खिलाड़ी छात्रों के खेलों का स्वरूप उनके व्यक्तिगत रूचि पर निर्भर करता है। खेलों के अंतर्गत क्रिकेट, फुटबॉल टेनिस एवं बैडमिंटन इत्यादि है। प्रत्येक खिलाड़ी छात्र अपनी रूचि के अनुसार खेल को स्वीकार करता है और खेल खेलने के दौरान अपनी विशिष्ट क्षमता को दिखाता है।[1]

संभाग में अध्ययनरत खिलाड़ी छात्र खेलों में साझेदारी करता है, उनमें सामाजिक कौशल का व्यापक विकास होता है। खेलों के दौरान छात्र अन्य जगहों के छात्रों से मिलते हैं तथा उनसे बातचीत करता है जिससे खिलाड़ी छात्रों की सामाजिक कौशल का विकास होता है। किंतु गैर खिलाड़ी छात्र महाविद्यालय स्तर तक सिमटकर रह जाते हैं, जिससे उनका कौशल विकास पर्याप्त नहीं हो पाता है। जब खिलाड़ी छात्र किसी भी प्रकार का खेल खेलते हैं तो उसके शारीरिक क्रियाकलाप तो होता ही है, साथ में उनके मस्तिष्क के भीतर का जो भाग है उसका पर्याप्त विकास होता है जो खिलाड़ियों को आगे बढने में काफी मदद करता है। खेल की गतिविधियों से शारीरिक सहनशीलता बढ़ती है, क्योंकि सभी खेल आखिरी तक खेला जाता है, जिससे खिलाड़ी छात्र को धैर्य रखने में सफलता मिलती है, खिलाड़ी छात्रों के भीतर धैर्य रखने की क्षमता गैर खिलाड़ी छात्रों की तुलना में अधिक होती है।[2]

खिलाड़ी छात्रों को खेल के दौरान प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है कि जीतना एवं हारना जीवन का भाग है और छात्र इसे खेल की उन क्रियाकलापों के माध्यम से सीखता है, जिनमें वह भाग लेता है। खिलाड़ी छात्रों की सहनशीलता गैर खिलाड़ी छात्रों के अपेक्षा अत्यधिक होता है क्योंकि खेल खिलाड़ी की सहनशीलता के लिए चुनौती के समान होता है, यदि खिलाड़ी खेलो में सहभागी करते हैं तो उन्हें सहनशील बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। खेल न सिर्फ व्यक्ति को स्वस्थ रहने में महत्वपूर्ण योगदान देकर सफल बनाते हैं अपितु आधुनिक युग की संकीर्णतावादी सोच के खिलाफ खिलाड़ियों को निष्पक्ष, विनम्र और सहिष्णु बनाकर एक बेहतर मानव संसाधन के रूप में परिवर्तित करते हैं। खेलों की महती को विश्व के सम्पूर्ण समाज एवं सभ्यता में

स्वीकृति मिली है। रामायण, महाभारत से लेकर ग्रीको रोमन दंत कथाओं में होने वाले खेलों का जिक्र इस बात की पुष्टि करता है। पुनः ओलंपिक की प्रारम्भिक शुरूआत यह सुस्पष्ट करती है कि खेलों को सांस्थानिक महत्व मिलती रही है।

मनुष्य की मूल्य प्रवृत्तियों के विषय में विस्तृत अध्ययन करने वाले मनोवैज्ञानिक मैक्डूमल द्वारा खेल को मनुष्य की चार सामान्य मूल प्रवृत्तियों में से एक माना है, इनके विपरीत कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक खेल को सामान्य मूल प्रवृत्ति न मानकर व्यक्ति की उत्सुकता, रचना और अनुकरण की मूल प्रवृत्तियों की व्यावहारिक परिणति के रूप में देखते हैं। फिर भी सामान्य रूप से यह स्वीकार की गयी है कि किसी न किसी रूप में अपनी मूल प्रवृत्तियों की वजह से खिलाड़ी छात्रों में खेलों के प्रति अत्यधिक रूझान बढ़ी है, परंतु कतिपय अन्य मनोवैज्ञानिक द्वारा छात्रों की खेल वृत्ति के पीछे अन्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। खेल द्वारा खिलाड़ी छात्रों में निम्न सामाजिक गुणों यथा – राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना, सामाजिक भावना का विकास, जाति पाति की भावना का विकास उत्पन्न होने में कमी, ऊँच–नीच की भावना समाप्त, दूसरे लोगों से मेल जोल बना रहता है इत्यादि। वास्तविक रूप में खेल का शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक और सामाजिक महत्व यह साबित करता है कि खेल के माध्यम से खिलाड़ी छात्रों के व्यक्तित्व का अच्छा विकास होता है। जबकि गैर खिलाड़ी छात्रों के संवेगात्मक, शारीरिक, सामाजिक और मानसिक व्यक्तित्व का अच्छा विकास नहीं होता है क्योंकि नैतिक दृष्टिकोण से खेल कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेने के कारण गैर खिलाड़ी छात्रों में ईमानदारी, आत्मनियंत्रण, निष्पक्षता, सच्चाई, सहनशीलता और सहयोग इत्यादि गुणों का विकास कम होता है। खेल से छात्र सीखता है कि एक अच्छा खिलाड़ी प्रतियोगिता में हार जाने पर भी हतोत्साहित नहीं होता तथा न ही उनमें द्वेय की भावना उत्पन्न होता है। खेलों के द्वारा खिलाड़ी छात्रों में दिवास्वप्नों का देखना समाप्त होना, लज्जाशीलता, संवेगों के नियंत्रण की क्षमता का विकास होना, चिड़चिड़ापन, लड़कपन और कायरता इत्यादि दोषों को समाप्त करने के साथ–साथ खिलाड़ी छात्र प्रसन्नचित्त रहना एवं जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का विकास होता है।[3]

रीवा संभाग के शासकीय एवं गैर शासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं के सामाजिक आयाम से सम्बन्धित पक्षों का सूक्ष्म अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि जिले के खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक पहल लाने में प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रशिक्षण के अभाव में किसी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं का सामाजिक जीवन पशु की भांति हो जाता है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में मनुष्य अथवा युवा वर्ग या छात्र छात्राओं में सोचने, विचारने एवं प्रबुद्धता का विकास कदापि नहीं हो पाता है, जिससे छात्र–छात्राएँ अपनी सामाजिक मूल्यो को भलीभांति नहीं निभा पाते हैं। अतः ऐसी दृष्टि में रीवा संभाग के सभी जिलों में शासकीय व गैर शासकीय प्रशिक्षण संस्थानों का जाल से फैला हुआ है जिससे क्षेत्र विशेष के छात्र–छात्राएँ इन संस्थानों से उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त कर अपने बौद्धिक ज्ञान को प्रखर करने में सक्षम बना रहे हैं, जिसका उनके सामाजिक आयाम पर अनुकूल प्रभाव पड़ रहा है।

**(ब) राजनैतिक आयाम** – खेल सिद्धान्त के महत्व को प्रतिपादित करने वालों में मार्टिन, ऑस्कर, मॉगेन्स्टर्न और कार्य डायच का नाम असराहनीय है। जर्मन गणितज्ञ लीबनिट्स ने 1710 ई. में इसकी महत्व एवं आवश्यकता को समझ लिया था। परंतु इसके व्यापक उपयोग का श्रेय जॉन न्यूमैन को है। इन्होंने इनका उपयोग अर्थशास्त्र में किया है। इस सिद्धान्त का विकास टॉमस शेलिंग के माध्यम से की गयी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में मार्टन कैप्लन, रिचर्ड क्वाण्ट और आर्थर ली वर्स ने खेल सिद्धान्तों के प्रतिमानों को स्वीकारने का प्रयास किया है। इन विचारकों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को भलीभांति समझने हेतु खेलों का माध्यम अपनाये हैं। फलतः खेल उपागम विश्लेषण का एक अंग है तथा इनमें अनेक माध्यमों से श्रेष्ठ माध्यम का चुनाव करना होता है। यह सिद्धान्त इस प्रश्न का प्रत्युत्तर है कि किन दशाओं में कौन सी फैसला/निवास या विकल्प

विवेकपूर्ण होता है। यह सिद्धान्त उन व्यक्तियों हेतु सर्वाधिक उपयोगी है जो एक विशिष्ट समस्या पर निर्णय लेना चाहते हैं या जो अपने विकल्प की तुलनात्मक रूप से उपयोगिता देखना चाहते हैं।

इस सिद्धान्त में यह माना जाता है कि जिस तरह शतरंज इत्यादि खेलों में दो अथवा अनेक प्रतिद्वन्द्वी एक दूसरे को हराने हेतु भिन्न–भिन्न तरह की चालें चलते हैं, उसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भिन्न–भिन्न राज्य विभिन्न तरह की चाल चलकर अपने विरोधियो को हारने पर मजबूर करते हैं।

1950 के दशक के प्रारंभ में केन्द्र सरकार ने राष्ट्र में खेलों मानकों को समझने हेतु अखिल भारतीय खेल परिषद का गठन किया। वर्ष 1982 में एशियाई खेलों के आयोजन के पश्चात् खेल विभाग को युवा कार्यक्रम तथा खेल विभाग में परिवर्तित कर दिया गया। वर्ष 1984 में राष्ट्रीय खेल नीति का निर्माण हुआ। वर्ष 2000 में विभाग को युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय में रूपांतरित कर दिया गया। वर्ष 2011 में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा भारतीय राष्ट्रीय खेल विकास संहिता, 2011 को अधिसूचित किया, वर्ष 2022 में नागरिक उड्डयन मंत्रालय के माध्यम से एरोबेटिक्स, एरोमाडलिंग, हैंग ग्लाइडिंग, ड्रोन तथा पावर्ड हैग ग्लाइडिंग एवं पैराशूटिंग इत्यादि हेतु राष्ट्रीय वायु खेल नीति 2022 लांच किया गया।

देश में सर्वाधिक परिवार अपने बच्चों पर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने एवं इंजीनियरिंग सफल उद्यमी अथवा डॉक्टर बनने हेतु कड़ी परिश्रम करने का दबाब रखते हैं। इनमें अंतर्निहित भावना यह है कि खेलों में योग्य आजीविका मौकों का अभाव है तथा ये एक सम्पन्न/समृद्ध जीवन के क्रियान्वयन में सहयोग कदापि नहीं कर सकते हैं। समाज में विद्यमान सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं का खिलाड़ी छात्रों का नकारात्मक प्रभाव रहा है। निर्धनता की वजह से आधारभूत खेल अवसंरचना तक पहुँच की कमी, छात्राओं के लिए खेलों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन की कमी और स्टेडियम एवं अन्य खेल अवसरंचनाओं व अवसरों का शहरों में केन्द्रित होना इत्यादि ने राष्ट्र में सकारात्मक खेल संस्कृति के विकास को बाधित किया है।[4]

खेलों में सर्वाधिक खेल संघों पर राजनेताओं का अधिकार होता है, जिसने कभी अपने जीवन में जिला स्तर की खेलों में हिस्सा नहीं लिया। वह खेल संघों के अध्यक्ष बनकर कुर्सी पर विराजमान होते हैं। किसी नेशनल एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में राज्य का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ी छात्रों को खेल संघ के अध्यक्ष एवं खेल विभाग में उच्च पदों पर विराजमान होना चाहिए। रीवा संभाग के सर्वाधिक छात्रों का कहना है कि शिक्षा एंव स्वास्थ्य के क्षेत्र में नवीन संस्थानों को स्थापित करने तथा नवीन योजनाओं की घोषणा करने के बजाय गुणवत्ता पर विशेष ध्यान केन्दित करने की आवश्यकता है, संभाग भर में प्रत्येक क्षेत्र में खेल से सम्बन्धित रोजगार का निर्माण हेतु खिलाड़ी छात्रों का कहना है कि खेलों में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए, खेल ऐसोसियेशन में ऐसे राजनीतिक पदाधिकारी विराजमान हो जाते हैं जिसका खेल में कोई सम्बन्ध नहीं होता है। ऐसी दशा में खिलाड़ी छात्रों का भविष्य पर खतरा मंडराने लगता है। खेल प्रतिस्पर्धापूर्ण और सहकारितापूर्ण दोनों तरह का हो सकता है, खेल के सैद्धान्तिक विश्लेषण की इकाई खिलाड़ी होता है। खिलाड़ी से तात्पर्य उससे है जो निर्णय लेता है, खिलाड़ी दो भी हो सकते तथा उससे अधिक भी। खेल के अपने नियम होते हैं, इन नियमों पर खिलाड़ियों का वश नहीं रहता है, जैसे शतरंज का नियम है कि पैदल मोहरा एक बार में एक अथवा दो घर पार कर सकता है। खेल के नियम ही यह निर्णय करता है कि खिलाड़ी क्या कदम उठायेगा? खेल में प्रत्येक खिलाड़ी इस कोशिश में लगे रहते हैं कि वह अपने लिए सर्वाधिक लाभ अर्जित करे।

खेल सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक क्रीड़ा स्थली के रूप में मानता है, जहाँ राष्ट्र एवं राज्य अपनी व्यूह रचना कर रहे हैं, जिस तरह सामाजिक संगठन सहयोग के चिन्ह हैं, उसी तरह सामाजिक संघर्ष भी होते हैं। संघर्ष जब आखिरी अवस्था में पहुंच जाता है तो युद्ध होता है, किंतु मानव की इस प्रवृत्ति को रचनात्मक तरीके से भी नियमित की जा सकती है तथा उसका मुख्य उदाहरण है खेल का मैदान, जहाँ दो सुस्पष्ट दल होता है, प्रतिद्वन्द्वता होता है तथा प्रत्येक समूह सिर्फ अपनी विजय चाहता है और अपने विरोधी को पराजित करना चाहता है।[5]

रीवा संभाग में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओ के राजनैतिक आयाम को सुदृढ़ करने में प्रशिक्षण संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान है। जिले के प्रशिक्षण संस्थानों से अध्ययन उपरांत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं की मेघा का विकास हो रहा है जिससे जिले के खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं का राजनीति के प्रति भी लगाव बढ़ता जा रहा है, जिले के युवा वर्ग खेल विधा के साथ–साथ राजनीति विज्ञान विषयों का अध्ययन कर अपनी मेघा को निखारने का सार्थक प्रयास कर रहे हैं। रीवा संभाग के 7 जिले के छात्र छात्राओं को अपना राजनीतिक दृष्टिकोण बनाने का अवसर मिल रहा है। राजनीति के क्षेत्र में युवा वर्ग आज शिक्षा के अभाव में कदापि सफल नहीं हो सकता है। इस दृष्टि से भी वर्तमान समय में छात्र–छात्राएं खेल के साथ–साथ राजनीतिक कैरियर को भी जोड़ने में लगे हुए हैं, ताकि वे क्षेत्र विशेष के एक प्रमुख नागरिक के रूप में अपनी पहचान सुनिश्चित कर सके जिससे वर्तमान राजनीतिक गलियारे में उनके अवदान भी लोगों द्वारा याद किये जा सकते हैं और आने वाले समय में वे राजनीति के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके। इसके लिए उच्च स्तर का प्रशिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है।

**(स) आर्थिक आयाम** – खेल अतिरिक्त रूप से अर्थव्यवस्था को भिन्न–भिन्न ढंगों से लाभ पहुँचाने में सहयोग प्रदान करता है, जैसे वित्तीय विकास पर कार्य करना, अत्यधिक कार्य के द्वार खोलना तथा व्यक्तियों को नवीन क्षमताओं में महारत हासिल करने हेतु प्रोत्साहित करना। खेलों में संसाधन व्यय करते समय मनुष्य अत्यधिक क्षमताओं एवं सूचनाओं में महारत प्राप्त कर रहा है। जहाँ लोग निवासित हैं, कार्य कर रहे हैं तथा योगदान करते हैं। टूर डी फ्रांस जैसे खेल पर्यटकों तथा खेल प्रेमियों को सुविधाजनक देश की तरफ जाने तथा इस मौके को आमने–सामने देखने हेतु आकर्षित करता है, तदनुसार राष्ट्र के यात्रा उद्योग का समर्थन करते हैं। खिलाड़ी छात्रों के लिए खेल भी एक तरह की स्कूली शिक्षा है तथा इसलिये यह खिलाड़ी छात्रों को ऐसे मूल्य उपलब्ध करेगा जो आने वाले समाज का नेतृत्व करेंगे। खेलों ने इस वित्तीय दृष्टि को स्वीकारा है तथा इनका प्रयोग प्रतियोगिताओं को गणितीय आयोजनों में निर्माण हेतु किया है। जैसे एक गेंद के खेल को देखते हुए, एक सलाहकार दूसरे समूह की संभावित प्रणालियों को सम्बोधित करने वाले मूल्यों को जोड़ देगा तथा निरीक्षण करेगा कि एक मात्रात्मक मॉडल एवं खेल दोनों मे प्रक्रियाओं पर विचार करने के लिए किये जा सकते हैं।

आर्थिक विकास का ध्येय प्रति व्यक्ति आय में होने वाली वृद्धि से है। प्रति व्यक्ति आय का अनुमान राष्ट्रीय आय को जनसंख्या से भाग देने पर लगाया जा सकता है। प्रति व्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय/जनसंख्या/फलतः सिर्फ राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि आर्थिक विकास को द्योतक/प्रतीक नहीं है, इसकी वजह यह है कि अगर जनसंख्या में होने वाला वृद्धि दर राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि दर की अपेक्षा अत्यधिक होगा तो प्रति व्यक्ति आय बढ़ने के स्थान पर कम हो जायेगा। वास्तविक आय से तात्पर्य किसी देश की मौद्रिक आय का स्थिर मूल्यों/कीमतों पर लगाये जाने वाले अनुमान से है, इनकी गणना निम्न सूत्र से किया जाता है[6] –

वास्तविक आय (R) = मौद्रिक आय (y) /कीमत स्तर (p)

यानि मौद्रिक आय में होने वाली वृद्धि आर्थिक विकास का वास्तविक सूचक नहीं है।

आर्थिक विकास में शुद्ध आय में लगातार बढ़ोत्तरी होना चाहिए, अल्पकाल में आर्थिक क्रिया के अचानक वृद्धि हो जाने से जैसा कि उत्तम प्रकार के फसल अथवा ऐसी ही अन्य लघुकालीन स्थिति की वजह से प्रति व्यक्ति आय में होने वाली अस्थायी बढ़ोत्तरी को आर्थिक विकास कदापि नहीं समझा जाना चाहिए। आर्थिक विकास की परिस्थिति में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में इस तरह की बढ़ोत्तरी होना चाहिए कि गरीबी रेखा से नीचे व्यक्तियों की संख्या में बढ़ोत्तरी नहीं होना चाहिए। इनके साथ–साथ आय के वितरण की असमानता में भी वृद्धि नहीं होना चाहिए। अतएव वास्तविक आय में वृद्धि के साथ–साथ उनका नाम पुनर्वितरण भी आर्थिक विकास हेतु जरूरी है।[7]

संयुक्त राष्ट्र की विकास योजना के अनुसार, मानव विकास को व्यक्तियों के चयन मे वृद्धि की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। विकास के सम्पूर्ण स्तरों पर व्यक्तियों के तीन अनिवार्य चयन में एक दीर्घकालीन स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, अच्छा ज्ञान प्राप्त करना और एक बेहतर जीवन स्तर हेतु जरूरी संसाधनों की पहुंच शामिल है। अगर यह जरूरी चयन प्रक्रिया मौजूद नहीं है तो जीवन की गुणवत्ता में सुधार हेतु बहुत से अन्य मौके पहुंच से बाहर होगा। मानव विकास के दो आयाम हैं, जिनमें योग्यता प्राप्त करना तथा इन प्राप्त योग्यताओं का उपयोग, आराम, उत्पादकता तथा अन्य उद्देश्यों हेतु करने से है। मानव विकास के लाभ, आय, विस्तार एवं धन संचय से कहीं अत्यधिक आगे तक जाता है, क्योंकि व्यक्ति मानव विकास की जरूरतों को बनाता है। मानव विकास आर्थिक संवृद्धि से कहीं अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आर्थिक संवृद्धि सिर्फ एक माध्यम में सुधार पर ध्यान केन्द्रित करते हैं यानि आय अथवा उत्पाद जबकि मानव विकास समस्त मानवीय माध्यमों/विकल्पों में बढ़ोत्तरी जिसमें स्वास्थ्य, खेल, शिक्षा, स्वच्छ पर्यावरण तथा भौतिक कल्याण सम्मिलित है, पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस तरह व्यक्तियों के जीवन को सुधारने के माध्यम विस्तृत से आर्थिक आयाम की गुणवत्ता से प्रभावित होता है, परंतु इस तरह की संवृद्धि का प्रभाव सिर्फ इनके परिमाणात्मक पहलू तक ही सीमित रहता है।[8]

**(द) समग्र सर्वेक्षण** – सामाजिक एवं वैज्ञानिक शोध करने पूर्व अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित सभी तथ्यों का सूक्ष्म/गहनता से अध्ययन कर शोधकर्ता द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि शोध अध्ययन से सम्बन्धित प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिए अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित सम्पूर्ण क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर समंक संकलित किये जायेंगे या समग्र में से प्रतिदर्श के आधार पर क्षेत्रों का चयन कर प्राथमिक आँकड़ों को एकत्रित किया जाता है। इस दृष्टिकोण से शोधकर्ता द्वारा चयन किया गया, शोध शीर्षक ''महाविद्यालयों में अध्ययनरत खिलाड़ी छात्रों के राज्य स्तरीय प्रदर्शन का अध्ययन'' (अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में) है। चूंकि शोध शीर्षक बहुत बड़ा होने के कारण अर्थात् अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से सम्बद्ध शासकीय एवं गैर शासकीय महाविद्यालय संभाग के 7 जिलों में दूर–दूर तक फैले हुए हैं। अतः ऐसी स्थिति में रीवा संभाग के सभी शासकीय महाविद्यालयों की संख्या 67 तथा अशासकीय महाविद्यालयों की संख्या 175 अर्थात् कुल 242 महाविद्यालयों में शोधकर्ता का पहुँचना अत्यन्त कठिन होने के कारण शोधकर्ता द्वारा जिले के कुल 242 महाविद्यालयों में से शासकीय महाविद्यालयों को तीन श्रेणियों अग्रणी, नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयो में वर्गीकृत कर रीवा संभाग के सभी जिलों से 7 अग्रणी महाविद्यालय, 7 नगरीय महाविद्यालय एवं 7 ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों का चयन समग्र में से न्यादर्श के सविचार विधि के माध्यम से कुल 21 महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

रीवा संभाग के 7 जिलों से चयनित कुल 21 महाविद्यालयों में अध्ययनरत खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, आर्थिक स्थिति एवं सांस्कृतिक दशाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने हेतु प्रत्येक महाविद्यालय से 30–30 खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी छात्र–छात्राओं का चयन कर कुल 630 छात्र–छात्राओ से सर्वेक्षण का कार्य समय प्राथमिक स्तर पर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आंकड़ों का संकलित कर वर्गीकरण के सारणीबद्ध कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

## निष्कर्ष –

प्राथमिक समंकों का विश्लेषणात्मक विवेचन करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधि के औसत माध्य/प्रतिशत का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त करने के उपरांत निर्वचन प्रस्तुत किये गये है जिनसे यह फलीभूत होता है कि रीवा संभाग के खिलाड़ी छात्र–छात्रायें महाविद्यालयों से प्रशिक्षण प्राप्त कर संभाग विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तर पर अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं जिससे विश्वविद्यालय के नाम का प्रसार–प्रचार होने के साथ–साथ क्षेत्रीय अग्रणी, नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों के महाविद्यालयों के नाम भी प्रसारत व प्रचारित हो रहे हैं। जिनकी

वजह से आज राज्य स्तर पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय की ख्याति में काफी वृद्धि हुयी है। इसके पीछे प्रमुख रूप से रीवा संभाग के महाविद्यालयों में प्रशिक्षण के साथ–साथ खिलाड़ी छात्र–छात्राओं को खेल की विधा में कुशल प्रशिक्षण दिया जाता है। आज रीवा संभाग के महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनेक छात्र–छात्रायें राज्य स्तर पर अपनी विधा का प्रदर्शन कर पुरस्कृत हो रहे हैं, जिससे संभाग के अन्य दूसरे छात्र–छात्राओं को प्रेरणा मिल रही है।

## संदर्भ ग्रन्थ –

[1] कुंवर, आर.सी. – शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास, अमित ब्रदर्श पब्लिकेसंस, नागपुर, वर्ष 1996, पृष्ठ 35

[2] ओड, लक्ष्मीकान्त के. – शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर, संस्करण 1994, पृष्ठ 45

[3] शर्मा, आर.पी. –शारीरिक शिक्षा : एक अध्ययन, अशोक पब्लिशर्स, नई दिल्ली, वर्ष 2008, पृष्ठ 11

[4] सिंह, अजमेर – शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वर्ष 2004, पृष्ठ 39

[5] सिंह, अजमेर – शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वर्ष 2004, पृष्ठ 77–78

[6] अल्तेकर, ए.एस. एवं मुकर्जी, आर.के. – प्राचीन भारत में शिक्षा, नवीन प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2004, पृष्ठ 105

[7] सिंह, अजमेर – शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, वर्ष 2004, पृष्ठ 6

[8] राम, पारसनाथ – अनुसंधान एक परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, जयपुर, संस्करण 1993, पृष्ठ 10